



शिष्य

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

मुझे याद है जब मुझे प्रवेश मिला और मैंने अगली पंक्तियों में अपने लिए एक जगह पाई — डरा हुआ, जिज्ञासु, ज़रा भी महत्वाकांक्षी नहीं — और फिर भी पहला नियम बस एक ही था: पाँच वर्षों तक तुम्हें खामोश रहना होगा और सुनना होगा, बिना कोई सवाल पूछे, कम से कम इस जगह में जिसे केवल विधवा के पुत्र ही जानते हैं।

अभी कुछ ही बैठकें बीती थीं कि खोए क़दमों के उस कक्ष में हर कोई पूछने लगा कि मैं कौन हूँ, क्या करता हूँ, और कैसे करता हूँ, पर मैं मुस्कुराता और चुप रहता — शिष्टाचार के जो थोड़े से शब्द मैंने सीखे थे, उन्होंने मुझे सिखाया कि पूछे जाने पर भी, मौन मेरी ओर से बोल देता था।

बाक़ी सारी शक्तियों से रूबरू होने के बाद, एक सवाल बच रहता है। हम इसका क्या करें?

शागिर्द के पास कोई साम्राज्य नहीं होता। वह किसी बाज़ार पर राज नहीं करता। किसी कंपनी को नहीं चलाता। किसी धर्म की नींव नहीं रखता। वह देखता है। वह सुनता है। वह जोड़ता है। वह याद रखता है। उसका काम खेल जीतना नहीं है। उसका काम मेज़ को समझना है। बाक़ी पत्ते कर्म करते हैं। शागिर्द व्याख्या करता है। बाक़ी शक्ति बटोरते हैं। शागिर्द अर्थ बटोरता है। और शायद यही इस गड्डी का असली अचरज है। सफ़र के अंत में, तुम राजा नहीं बन जाते। तुम ज़ौली नहीं बन जाते। तुम कोई ब्रांड नहीं बन जाते। तुम शागिर्द ही बने रहते हो।

क्योंकि हर शक्ति, एक बार समझ लिए जाने पर, एक और बड़े सवाल का दरवाज़ा खोल देती है। और जब तुम आखिरी मील चलते हो — वह मील जो कहीं और, किसी और पहचान के तहत, एक नई शुरुआत का प्रतीक होता है — तो तुम अपने साथ न स्मृति ले

जा सकते हो, न यादें — ठीक वैसे ही जैसे एआई के साथ होता है: हर बार, तुम्हें फिर से शुरू करना पड़ता है, और कहानी को नए सिरे से गढ़ना पड़ता है।

“हम कहानी नहीं हैं। यह तो उसका कहा जाना है, वह वर्णन, जो हमें सचमुच अमर बना देता है — शागिर्दों की तरह।”

फर्दिनांदो